चन्दा झा

कविवर चन्दा झा मैथिलीक एक महान कवि भए गेल छथि। यदि इनका वर्तमान मैथिली साहित्यक जनक कहीतऽ अत्युक्ति नहि होयत। हिनका नाम आबि मैथिलीक मध्य युग समाप्त भए जाइत अछि। आओर नवीन युगक श्रीगणेश होइत अछि। कवीश्वर चन्दा झा युग सन्धिक कवि छथि, किन्तु नवीनोन्मुख सेहो छथि। जेना विद्यापति प्राचीन काव्यपरम्पराक मुख्य द्वार पर ठाढ़ भए अग्रिम विकास पथक निर्देश करैत सबल प्रकाश पिण्डक समान अधिष्ठित छथि तहिना कवीश्वर चन्दा झा नवयुगक मुखद्वार पर ठाढ़ भए नित नूतन नवीनताक प्रेरणा दैत प्रतीत होइत छथि।

आधुनिक मैथिली साहित्यक शाश्वत निधि युग निर्माता साहित्य, सृजनकर्ता ओ अगाध साहित्यकार स्वच्छ-गोत्र चन्द्रनाथ झा प्रसिद्ध नाम-चन्दा झा, साहित्यिक नाम कविचन्द्र क जन्मक सूचना इनकाहि लिखल पोथी 'रामायण' मे प्राप्त भेल अछि। "शकाब्दे रामेशानन-मुनि-निशानायक मिते तपोन्ध्ये सप्तम्यामपि गुरु दिनं चन्द्र कवितः जनुः इत्यादि"। रामायण कवीश्वरक प्रथम पोथी मानल गेल अछि। तदनुसार २० जनवरी 1831 ई० माघ शुक्ल सप्तमी दिन बृहस्पति कें काश्यप गोत्रीय मड़र मूलक मैथिली ब्राह्मण परिवार मे भेल छलाह। व्याकरण ओ साहित्य मे निष्णात भेलाक बाद अनेक ड्योढ़ी दरबार मे आश्रय ग्रहण कयल। किन्तु हिनक प्रतिभा ओ यशक मुख्य रूपसँ राजा लक्ष्मीश्वर सिंहक सान्निध्यमे अधिक प्राप्त कयलनि।

कविताक अतिरिक्त आनहु क्षेत्र मे चन्दा झा नवीनताक सूत्रधार भए प्रकट भेलाह। चन्दा झा मिथिलाक गौरवपूर्ण इतिहास कें प्रकाशित करब ओ बड़ आवश्यक बुझैत छलाह। 1905 ई० मे 'मैथिल साहित्य साधनक प्रकाशन जयपुरसँ होअए लागल तँ पं० चन्द्रदत्त झा 15 जनवरी क अपन पत्रोत्तर दैत लिखलनि–।

लिखल जाए मिथिला इतिहास, नहि हो ताहिमे शिथिल प्रयास।
विषय विशेष हमहुँ लिखि देब, स्वयमहु एक टका नहि लेब।
मासिक मिथिला पत्र प्रचार, मैथिल मात्र विदित विचार।

एहिमे इनक वैयक्तिक रुचि नीक जकाँ व्यक्त भेल अछि – मिथिलाक इतिहास लेखब। मैथिलीकें प्रथम मासिक पत्रक प्रकाशनक जाहि शब्द मे ओ स्वागत कयल सेहो इनक नवीनताप्रिय व्यक्तित्वक नीक जकाँ द्योतन करैत

Scanned with CamScanner

वैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन, प्राचीन साहित्यक शोध संकलन आदिक आब धरिक महत्व बढ़ि गेल अछि से व्याख्येय नहि अछि। तकरो आधारशिला ओएह राखल गेल। क्रममे साहेबरामदासक पदावलीक संकलन-संपादन, विद्यापति ओ गोविन्ददासक गीतावलीक संग्रह प्रभृति हुनक कार्य बड़ महत्वपूर्ण अछि। रचनात्मक साहित्य सर्जनाक क्षेत्रमे कविताक अतिरिक्त 'पुरुष-परीक्षाक' क गद्य-पद्य अनुवाद एवं परिशिष्टमे संलग्न टिप्पणीक पुरातत्वान्वेषण ओ ऐतिहासिक दृष्टिएँ महत्वक अछिए। संग-संग मैथिलीमे गद्यपरम्पराक आरम्भहुक दृष्टिएँ महत्व अछि। प्राचीन विद्वान-कविक परिचयमे पाँजिक प्रयोग ओएह चलाओल। एहि समस्त हुनक नवीनताक दृष्टि सएह प्रेरक छल। ओ युगक समस्त प्रतिभाशाली आधुनिक दृष्टिसम्पन्न महापुरुष छलाह। नहि मैथिली साहित्यक सभ दृष्टिएँ नवयुगस्त्रष्टा कविसाहित्यकार सेहो छलाह। ओ अग्रिम युगीन आवश्यकताक मनीषी छलाह आओर तदनुरूप अध्ययन-अनुशीलन एवं साहित्य सर्जन कए आगामी युगक पथ प्रदर्शन सेहो कएल।

मैथिली कविताक क्षेत्रमे ओ प्रबन्ध काव्य ओ गीतिकाव्य दुहु रीतिक रचना कएल। हिनक प्रबन्ध काव्य थिक 'मिथिला भाषा रामायण'। एहिसँ अपूर्व 'कृष्णजन्म' ~~कृष्ण~~ कथाकाव्यक रूपमे अवश्य उल्लेखनीय अछि मुदा ओहिमे महाकाव्य रचनाक परम्पराक प्रारम्भ नहि भेल।

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक

Scanned with CamScanner